Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-386-391

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 386-391
©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author :

1. फरहा नाज

शोधार्थी (मनोविज्ञान), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार.

2. डॉ. अमरनाथ प्रसाद

विभागाध्यक्ष (मनोविज्ञान विभाग), कुंवर सिंह महाविद्यालय, दरभंगा, (बिहार).

Corresponding Author :

फरहा नाज

शोधार्थी (मनोविज्ञान), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार.

व्यक्तियों के समायोजन एवं आत्म–विश्वास पर पूर्वाग्रह की मनोवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन

शोध–सारांश : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य व्यक्तियों के समायोजन एवं आत्म–विश्वास पर पूर्वाग्रह के प्रभाव का अध्ययन करना था। इसके लिए बिहार राज्य के दरभंगा जिला क्षेत्र से 300 व्यक्तियों का चयन उत्तरदाता के रूप में किया गया। शोध में चयनित उत्तरदाताओं की उम्र 25 से 35 वर्ष (औसत उम्र 30 वर्ष) थी। भारद्वाज एवं शर्मा के द्वारा विकसित पूर्वाग्रह मापनी, मो० शमशाद एव के० जहाँ के द्वारा हिन्दी रूपान्तरित समायोजन आविष्कारिका एवं गुप्ता द्वारा विकसित आत्म–विश्वास मापनी की सहायता से प्रदत्त–संग्रह का कार्य किया गया। संग्रहित किए गए प्रदत्तों को तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर विश्लेषित करते हुए समसामयिक संदर्भ में परिणाम तैयार किया गया। प्राप्त किए गए परिणाम में पाया गया कि व्यक्तियों के समायोजन एवं आत्म–विश्वास पर पूर्वाग्रह की मनोवृत्ति का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में एवं शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्वाग्रह की अवधारणा अधिक पाई जाती है।

शब्द कुंजी : व्यक्तियों, समायोजन, आत्म–विश्वास, पूर्वाग्रह, प्रभाव, अध्ययन।

परिचय : सामाजिक जीवन में अक्सर देखा जाता है कि लोग एक–दूसरे के बारे में जाति, धर्म, भाषा, नागरिकता, समुदाय, संगठन इत्यादि के आधार पर सकारात्मक एवं नकारात्मक भावना विकसित करते हैं। इस क्रम में लोग वास्तविकता को जानने का प्रयास नहीं करते हैं। दैनिक जीवन में मनुष्य अपने व्यवहार का जो प्रदर्शन करते हैं, उसमें उसकी नकारात्मकता अथवा सकारात्मकता की भावना, सहानुभूति एवं विचारधारा का प्रभाव होता है। समाज में रहनेवाले लोगों में किसी के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति होती है, तो किसी के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति होती है। जिनके प्रति लोग सकारात्मक मनोवृत्ति रखते हैं, उनके साथ उनकी सहभागिता एवं सम्प्रेषण सकारात्मक तरीके से होता है, जबकि जिनके प्रति लोग नकारात्मक मनोवृत्ति रखते हैं, उनके साथ उनकी सहभागिता एवं संप्रेषण नकारात्मक तरीके का होता है। इसके अलावे यह भी देखा जाता है कि जिनके प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति होती है, वह व्यक्ति यदि सही कार्य भी करता है, तो भी उसके प्रति नकारात्मक अवधारणा हीं बनी रहती है। मानव–व्यवहार की इसी प्रक्रिया से पूर्वाग्रह की उत्पत्ति होती है।

पूर्वाग्रह एक प्रकार का पूर्व निर्णय होता है, जिसमें व्यक्ति किसी समूह अथवा सदस्य के प्रति प्रतिकूल व्यवहार करने के लिए सक्रिय होता है। व्यक्ति के इस व्यवहार में किसी प्रकार का आधार नहीं होता है और न हीं विवेक अथवा तर्क का आभाव होता है। इस तरह पूर्वाग्रह का स्वरूप पक्षपातपूर्ण एवं

संवेगात्मक होता है। पूर्वाग्रह के संबंध मे मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि जो व्यक्ति पूर्वाग्रह से ग्रसित होते हैं, उन्हें इस बात का अनुभव नहीं होता है कि वे वास्तव में पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं। इस अप्रत्यक्ष गुण के कारण अच्छे व्यक्ति भी पूर्वाग्रह आधारित व्यवहार करने लगते हैं। हम अपने समाज में प्रजातीय, यौन, जाति, धर्म, आयु, राजनीति, सम्प्रदाय इत्यादि रूप में पूर्वाग्रह की भावना देखते हैं।

समायोजन एक गतिशील और निरन्तर चलनेवाली प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं, भावनाओं और व्यवहारों को अपने वातावरण की परिस्थितियों और बाधाओं के अनुसार अपने को समायोजित करता है। इस तरह समायोजन व्यक्ति और उसके वातावरण के बीच तालमेल बिठाने, तनाव से निपटने और संतुष्टि पाने की एक जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है।

इस शोध में पूर्वाग्रह के साथ समायोजन आधारित चर का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस संबंध में शोधार्थी का सोच है कि जब व्यक्ति अपने जीवन में उचित संतुलन बनाने के लिए प्रयास करता है, उसके इस प्रयास में उनकी सकारात्मक एवं नकारात्मक मनोवृत्ति प्रभावित करता है। अतः इस शोध में व्यक्तियों के समायोजन की क्षमता पर पूर्वाग्रह का पड़नेवाले प्रभाव को जानने के उद्देश्य से समायोजन आधारित चर को सम्मिलित किया गया है।

आत्म–विश्वास व्यक्ति के जीवन का वह अमूल्य गुण है, जो उसे उस कठिनाई का सामना करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। आत्म–विश्वास व्यक्ति को जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने में सहायता करता है। आत्म विश्वास से पूर्ण व्यक्ति के पास समस्याओं के समाधान खोजने की क्षमता होती है। आत्म–विश्वास हमें यह सीखाता है कि, असफलता भी सफलता की ओर एक कदम है। आत्म–विश्वास से पूर्ण व्यक्ति का व्यक्तित्व आकर्षक और प्रेरणादायक होता है। यह दूसरों के लिए एक उदाहरण बनता है और समाज में एक अलग पहचान बनाता है। आत्म–विश्वास हमें मानसिक रूप से मजबूत बनाने के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।

इस शोध में आत्म–विश्वास को भी एक आश्रित चर के रूप में सम्मिलित किया गया है, क्योंकि इस परिपेक्ष्य में शोधार्थी की अवधारणा है कि पूर्वाग्रह आत्म–विश्वास को प्रभावित करती है।

पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा : इस शोध में शोध–शीर्षक से संबंधित सही दिशा में कार्य करने के लिए पूर्व में किए गए कुछ अध्ययनों का अवलोकन किया गया है।

थ्रोट एवं जोशी (2020) ने अश्पृश्यता आधारित दीर्घकालिक व्यवहार का शोध आधारित अध्ययन किया है और परामर्शित किया है कि भारतीय समाज में नकारात्मक विचार के पीछे अश्पृश्यता आधारित दीर्घकालिक व्यवहार होता है।

फेज एवं क्रोह (2021) ने पूर्वाग्रह आधारित कथन में छिपी हुई स्वरूप का अन्वेषणात्मक अध्ययन किया है और प्रतिफल के रूप में पाया है कि व्यक्ति की आंतरिक प्रेरणा में वृद्धि और बाहरी प्रेरणा में कमी का लोगों के पूर्वाग्रह पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

बालाकृष्णन (2021) ने विद्यालय जानेवाले बच्चों के आत्म–सम्मान का क्षेत्र आधारित अध्ययन किया है और जानकारी दी है कि विद्यालयी स्तर पर अधिकांश विद्यार्थियों में मध्यम स्तर का आत्म–सम्मान का स्तर होता है, जबकि सबसे कम संख्या में आत्म–सम्मान का स्तर निम्न होता है।

नागराजा एवं कमला (2022) ने विद्यालय के विद्यार्थियों में समायोजन संबंधी समस्या के पीछे यौन, अध्ययन का कक्ष, विद्यालय का शहरी–ग्रामीण क्षेत्र आधारित कारक की सार्थक भूमिका होती है।

मंडल इत्यादि (2023) ने विद्यालय जानेवाले किशोरों में आत्म–सम्मान का अध्ययन किया है और परामर्शित किया है कि किशोरों की अपेक्षा किशोरियाँ आत्म–सम्मान की भावना अधिक स्तर रखती है। इसके अलावे उन्होंने विद्यार्थियों के कोटि संबंधी कारक का उसके आत्म–सम्मान पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

पास्कल इत्यादि (2023) ने पूर्वाग्रह से संबंधित एक अन्य अध्ययन के आधार पर बताया है कि अल्पसंख्यकों में विभेदीकरण एवं पूर्वाग्रह आधारित व्यवहारों के पीछे आक्रामकता का हाथ होता है।

हंग (2023) ने मानवीय पूर्वाग्रह से संबंधित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के आधार पर परामर्शित किया है कि, गलत सूचनाओं के विरमण पर मानवीय पूर्वाग्रह सकारात्मक प्रभाव डालता है और साथ हीं संवेगात्मक अनुक्रिया और नैतिक विश्वास पर सार्थक प्रभाव डालता है।

निवेदिता इत्यादि (2024) ने शहरी निर्धन बस्ती के किशोरों का अन्तर– सांस्कृतिक अध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि, निर्धन बस्ती में किशोरो में आत्म–सम्मान का स्तर निम्न होता है जबकि आत्म–सम्मान पर व्यक्तिगत कारकों की भी भूमिका होती है।

त्रिपाठी इत्यादि (2025) ने भारत में बच्चों के बीच पूर्वाग्रह एवं धार्मिक जागरूकता का अध्ययन किया है और जानकारी दी है कि पूर्वाग्रह की अवधारणा धार्मिक जागरूकता से नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है।

स्नातक के छात्रों में समायोजन से संबंधित एक अध्ययन के आधार पर प्रकाश (2023) ने परामर्शित किया है कि सामान्य छात्रों में सामान्य स्तर का समायोजन होता है, जबकि लड़कियों की अपेक्षा लड़कों में समायोजन का स्तर बेहतर होता है।

उपरोक्त व्याख्या को ध्यान में रखते हुए ''व्यक्तियों के समायोजन एवं आत्म–विश्वास पर

पूर्वाग्रह के प्रभाव का अध्ययन'' नामक शीर्षक से संबंधित शोध करने का निर्णय किया गया है।

शोध का उद्देश्य : प्रस्तुत शोध का प्रधान उद्देश्य व्यक्तियों के समायोजन एवं आत्म–विश्वास पर पूर्वाग्रह की अवधारणा के प्रभाव का अध्ययन करना था।

परिकल्पनाएँ :

(i) समायोजन की दृष्टि से पूर्वाग्रह ग्रसित एवं पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताओं में सार्थक रूप से भिन्नता होगी।

(ii) पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताओं के आत्म–विश्वास की अपेक्षा पूर्वाग्रह ग्रसित उत्तरदाताओं के आत्म–विश्वास का स्तर अपेक्षाकृत बेहतर होगा।

(iii) व्यक्तियों के पूर्वाग्रह की अवधारणा पर व्यवसाय संबंधी कारक का अलग–अलग प्रभाव होगा।

(iv) व्यक्तियों के पूर्वाग्रह की अवधारणा पर यौन संबंधी कारक का भिन्नात्मक प्रभाव होगा।

(v) ग्रामीण क्षेत्रों की उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह की अवधारणा अधिक होगी जबकि शहरी क्षेत्रों की उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह की अवधारणा कम होगी।

प्रविधि :

(I) प्रतिदर्श : इस शोध में बिहार राज्य के दरभंगा जिला क्षेत्र से उद्देश्यात्मक चयन पद्धति के आधार पर उत्तरदाताओं की विवरणी निम्नवत् है :

कुल उत्तरदाताएँ	–	300
पुरुष उत्तरदाताएँ	–	150
महिला उत्तरदाताएँ	–	150
ग्रामीण उत्तरदाताएँ	–	150
शहरी उत्तरदाताएँ	–	150
उत्तरदाताओं की उम्र सीमा	–	25 वर्ष से 35 वर्ष (औसत उम्र 30 वर्ष)
उत्तरदाताओं की स्थिति	–	सामान्य

(II) मापनियाँ :

(a) पूर्वाग्रह मापनी : उत्तरदाताओं के संबंध में पूर्वाग्रह की माप के लिए भारद्वाज एवं शर्मा द्वारा विकसित पूर्वाग्रह मापनी का प्रयोग किया गया। इस मापनी में पूर्वाग्रह की अवधारणा से संबंधित कुल 36 एकांशों को सम्मिलित किया गया है। मापनी में उत्तरदाता के द्वारा प्राप्त अधिकतम अंक पूर्वाग्रह उन्मुखता को सूचित करता है, जबकि न्यूनतम अंक पूर्वाग्रह के निम्न स्तर को सूचित करता है। यह मापनी पूर्वाग्रह के स्तर की जानकारी के लिए काफी विश्वसनीय, वैध, वास्तविक एवं उपयुक्त मापनी है।

(b) समायोजन मापनी : उत्तरदाताओं में समायोजन स्तर की माप के लिए बेल समायोजन मापनी के हिन्दी रूपान्तरण (मो० शमशाद एव के० जहाँ) जिसे समायोजन आविष्कारिका के नाम से जाना जाता है, का प्रयोग किया गया । इस मापनी में गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन से संबंधित कुल 127 एकांशों को सम्मिलित किया गया है। मापनी में उत्तरदाता के द्वारा प्राप्त अधिकतम अंक खराब समायोजन एवं न्यूनतम अंक अच्छा समायोजन को इंगित करता है। यह मापनी भी वर्त्तमान संदर्भ में व्यक्ति के समायोजन स्तर की जानकारी के लिए एक वैध, वास्तविक, विश्वसनीय एवं उपयुक्त मापनी है।

(c) आत्म–विश्वास मापनी : उत्तरदाताओं के संबंध में आत्म–विश्वास के स्तर की जानकारी के लिए रेखा गुप्ता के द्वारा विकसित आत्म–विश्वास मापनी का प्रयोग किया गया। इस मापनी में कुल 56 एकांशों को सम्मिलित किया गया है। इस मापनी में उत्तरदाताओं के द्वारा प्राप्त अधिकतम अंक निम्न आत्म–विश्वास एवं निम्नतम अंक उच्च आत्म–विश्वास को इंगित करता है। यह मापनी भी व्यक्तियों में आत्म–विश्वास की जानकारी के लिए वैध, वास्तविक एवं उपयुक्त मापनी है।

(d) व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र : शोधार्थी स्वयं के द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र के माध्यम से उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जानकारी प्राप्त की गई।

प्रदत्त–संग्रह की प्रक्रिया : उत्तरदाताओं से संगत प्रदत्तों की जानकारी के लिए शोधार्थी द्वारा निर्धारित किए गए अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण करते हुए लक्षित उत्तरदाताओं की सूची तैयार की गई। उसके बाद उत्तरदाताओं को उनसे मिलने का प्रयोजन बताते हुए आत्मीयता का संबंध स्थापित किया गया। साथ हीं, उन्हें इस बात का विश्वास दिलाया गया कि उनके द्वारा दी गई जानकारी को गुप्त रखा जाएगा। तत्पश्चात् आपसी विमर्श के आधार पर निर्धारित किए गए समय, तिथि एवं स्थान पर अल्प समूह बनाते हुए मापनियों के प्रशासन प्रक्रिया से प्रदत्त–संग्रह का कार्य किया गया। उत्तरदाताओं को उनके आवश्यक सहयोग के लिए धन्यवाद दिया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण : संग्रहित किए गए प्रदत्तों को तुलनात्मक सांख्यिकीय पद्धति के माध्यम से विश्लेषित करते हुए परिणाम तैयार किया गयज्ञं

परिणाम एवं व्याख्या : इस शोध में प्राप्त परिणाम एवं उसकी व्याख्या निम्नवत् है :

(i) पूर्वाग्रह और समायोजन : समायोजन पर पूर्वाग्रह की अवधारणा के प्रभाव की जानकारी के उद्देश्य से प्राप्त किए गए परिणाम का विवरण निम्नवत् है :

सारणी संख्या–(i)

समायोजन पर पूर्वाग्रह की अवधारणा के प्रभाव का परिणाम

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
पूर्वाग्रह ग्रसित उत्तरदाताएँ	150	108.13	24.64	2.01	9.94	<.01	298
पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताएँ	150	81.72	21.21	1.73			

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि, उत्तरदाताओं के समायोजन पर पूर्वाग्रह की अवधारणा का नकारात्मक एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि पूर्वाग्रह की मनोवृत्ति रखनेवाले उत्तरदाताओं ने समायोजन मापनी पर पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताओं की अपेक्षा अधिक माध्य अंक (108.13) एवं मानक विचलन अंक(24.64) प्राप्त किया है, जबकि तुलनात्मक टी–मूल्य (9.94) विश्वास के उच्चतम अंक (<.01) पर सार्थक पाया गया है। अतः इस परिणाम के आलोक में कहा जा सकता है कि पूर्वाग्रह के कारण व्यक्ति अपने परिवार, समाज में अपना समायोजन नहीं बना पाते हैं, जबकि स्वास्थ्य एवं संवेग की दृष्टि से भी कुसमायोजित होते हैं। अतः इस संबंध में पूर्व में निर्मित्त परिकल्पना संख्या (i) कि, ''समायोजन की दृष्टि से पूर्वाग्रहग्रसित एवं पूर्वाग्रहरहित उत्तरदाताओं में सार्थक रूप से भिन्नता होगी'' प्रमाणित होती है।

(ii) पूर्वाग्रह और आत्म–विश्वास : शोध कार्य के क्रम में उत्तरदाताओं के आत्म–विश्वास पर पूर्वाग्रह की अवधारणा के प्रभाव की जानकारी से परिकलित किए गए परिणाम को निम्नांकित सारणी में उपस्थापित किया गया है :

सारणी संख्या–(ii)

आत्म–विश्वास पर पूर्वाग्रह की अवधारणा के प्रभाव का परिणाम

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
पूर्वाग्रहग्रसित उत्तरदाताएँ	150	34.87	9.14	0.74	17.01	<.01	298
पूर्वाग्रहरहित उत्तरदाताएँ	150	18.64	7.28	0.59			

उपरोक्त सारणी–(ii) में प्रदर्शित किए गए परिणाम के अवलोकन से जानकारी मिलती है कि जो उत्तरदाता पूर्वाग्रह की भावना से ग्रसित थे, उनमें आत्म–विश्वास का स्तर निम्न है जबकि जो उत्तरदाता पूर्वाग्रह की भावना से स्वतंत्र थे, उनमें आत्म–विश्वास का स्तर ऊँचा पाया गया। इस परिणाम के संबंध में कह सकते हैं, व्यक्ति जब पूर्वाग्रह की भावना से ग्रसित होता है, तो वह किसी भी कार्य या समस्या समाधान के लिए जो भी कार्य करता है, उसमें उसका आत्म–विश्वास कमजोर हो जाता है। इसके अतिरिक्त पूर्वाग्रह की भावना से जब व्यक्ति स्वतंत्र होता है, तो उसमें आत्म–विश्वास की अवधारणा मजबूत होती है। अतः इस संबंध में पूर्व में निर्मित्त परिकल्पना संख्या–(ii) कि, ''पूर्वाग्रहरहित उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रहग्रसित उत्तरदाताओं की अपेक्षा आत्म–विश्वास का स्तर बाकी बेहतर होगा'' कार्यात्मक शोध के आधार पर प्रमाणित होती है।

(iii) पूर्वाग्रह की अवधारणा और व्यवसाय संबंधी कारक :

शोध के क्रम में शोधार्थी की यह जानने की इच्छा थी कि पूर्वाग्रह की अवधारणा पर व्यवसाय संबंधी कारक का प्रभाव पड़ता है या नहीं पड़ता है। इस संबंध में परिकलित किए गए परिणाम को निम्न सारणी संख्या–(iii) में प्रदर्शित किया गया है:

सारणी संख्या–(iii)
पूर्वाग्रह की अवधारणा पर व्यवसाय संबंधी कारक के प्रभाव का परिणाम

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
व्यवसाय करनेवाले उत्तरदाताएँ	150	92.89	23.76	1.94	0.21	N.S.	298
सामान्य उत्तरदाताएँ	150	92.31	23.42	1.89			

उपरोक्त सारणीं के अवलोकन से स्पष्ट है कि, व्यक्तियों के पूर्वाग्रह की अवधारणा पर उसके व्यवसाय संबंधी कारक का कोई भिन्नात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। साथ हीं, इस संबंध में परिकलित टी–मूल्य (0.21) विश्वास के आवश्यक स्तर पर सार्थक भी नहीं पाया है। इस परिणाम के आलोक में कहा जा सकता है कि व्यक्ति किसी भी व्यवसाय में संलग्न रहता है अथवा नहीं इससे उसमें पूर्वाग्रह की अवधारणा प्रभावित नहीं होती है। अतः इस संबंध में पूर्व में निर्मित्त परिकल्पना संख्या–(iii) कि, ''व्यक्तियों के पूर्वाग्रह की अवधारणा पर व्यवसाय संबंधी कारक का अलग–अलग प्रभाव होगा'' प्रमाणित नहीं होती है।

(iv) पूर्वाग्रह की अवधारणा और यौन संबंधी कारक : पूर्वाग्रह की अवधारणा पर यौन संबंधी कारक के प्रभाव की जानकारी के उद्देश्य से जो परिणाम तैयार किया गया उसे निम्नांकित सारणी में प्रस्तुत किया गया है :

सारणी संख्या–(iv)
पूर्वाग्रह की अवधारणा पर यौन संबंधी कारक के प्रभाव का परिणाम

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
पुरुष उत्तरदाताएँ	150	79.81	19.64	1.60	7.91	<.01	298
महिला उत्तरदाताएँ	150	98.72	21.74	1.77			

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत किए गए परिणाम के अवलोकन से स्पष्ट है कि, पुरुष उत्तरदाताओं ने जहाँ पूर्वाग्रह मापनी पर कम माध्य (79.81) एवं मानक विचलन (19.64) प्राप्त किया है, वहीं महिला उत्तरदाताओं ने पूर्वाग्रह मापनी पर अपेक्षाकृत अधिक माध्य (98.72) एवं मानक विचलन (21.74) प्राप्त किया है। इस परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि महिलाएँ, पुरुषों की तुलना में अधिकांश रूप से पूर्वाग्रह की अवधारणा से प्रभावित होती है। इसके अलावे परिकलित टी–मूल्य (7.91) विश्वास के उच्च स्तर पर सार्थक भी पाया गया है। अतः इस संबंध में पूर्व में निर्मित्त परिकल्पना संख्या–(iv) कि, ''व्यक्तियों के पूर्वाग्रह की अवधारणा पर यौन संबंधी कारक का सार्थक प्रभाव होगा'' प्रकार्यात्मक अन्वेषण के आधार पर प्रमाणित होती है।

(v) पूर्वाग्रह की अवधारणा और ग्रामीण–शहरी आवास संबंधी कारक : व्यक्तियों के ग्रामीण अथवा शहरी क्षेत्रों में निवासरत रहने संबंधी कारक से पूर्वाग्रह की अवधारणा किस स्तर तक प्रभावित होती है। इसकी जानकारी के लिए ग्रामीण एवं शहरी उत्तरदाताओं के उपर मापनियों के प्रशासन से प्राप्त प्रदत्तों का तुलनात्मक रूप से विश्लेषित किया गया। प्राप्त किए गए परिणाम को निम्नांकित सारणी संख्या–(v) में प्रस्तुत किया गया है :

सारणी संख्या–(v) : पूर्वाग्रह की अवधारणा पर ग्रामीण–शहरी आवास संबंधी कारक के प्रभाव का परिणाम

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
ग्रामीण उत्तरदाताएँ	150	132.72	31.63	2.58	8.85	<.01	298
शहरी उत्तरदाताएँ	150	101.43	29.52	2.41			

उपरोक्त सारणी में वर्णित परिणाम में ग्रामीण उत्तरदाताओं में शहरी उत्तरदाताओं की अपेक्षा पूर्वाग्रह के प्रति मनोवृत्ति का उच्च स्तर पाया है, क्योंकि ग्रामीण उत्तरदाताओं एवं शहरी उत्तरदाताओं

के द्वारा प्राप्त किए गए माध्य एवं मानक विचलनों में स्पष्ट अंतर है। जबकि माध्य एवं मानक–विचलनों के बीच टी–परीक्षण परिणाम (8.85) विश्वास के <.01 स्तर पर सार्थक भी पाया गया है। इस तरह के परिणाम के संबंध में कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्वाग्रह आधारित विचारधारा की प्रभावशीलता अधिक होना पूर्वाग्रह की अवधारणा का मुख्य जवाबदेह कारक है। अतः यह परिणाम पूर्व में निर्मित्त परिकल्पना संख्या–(v) कि, ''ग्रामीण क्षेत्रों की उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह की अवधारणा अधिक होगी, जबकि शहरी क्षेत्रों की उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह की अवधारणा कम होगी'' शोधात्मक अध्ययन के आधार पर प्रमाणित होती है।

परिणाम का निष्कर्ष : इस शोध में प्राप्त किए गए परिणाम के आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि व्यक्तियों के समायोजन एवं आत्म–विश्वास पर पूर्वाग्रह की मनोवृत्ति का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में एवं शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्वाग्रह की अवधारणा अधिक पाई जाती है।

शोध की सीमाएँ : इस शोध में कुछ कमियों के होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है, क्योंकि शोध संसाधन की कमी तकनीकी सुविधा की कमी, वित्तीय कारक इत्यादि से शोध में हुई कमियाँ स्वाभाविक है।

परामर्शन : प्रस्तुत शोध में शोधार्थी का परामर्शन है कि, पूर्वाग्रह की अवधारणा व्यक्ति में समायोजन एवं आत्म–विश्वास आधारित समस्या को बढ़ाती है, जिससे व्यक्ति मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अच्छा नहीं रह पाता है। अतः व्यक्तियों में मनोवैज्ञानिक अच्छाई हेतु समायोजन एवं आत्म–विश्वास को विकसित करने के लिए इस शोध शीर्षक से संबंधित व्यापक प्रतिदर्श बनाकर शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

संदर्भ–सूचीः

1. **ग्लेन, एम०सी० (2011) :** विश्वविद्यालय के छात्रों के शैक्षिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य आधारित पत्रिका, 2(1), 72–76.
2. **थ्रोट, ए० एवं जोशी, ओ० (2020) :** भारत में अश्पृश्यता आधारित दीर्घकालिक व्यवहार, आर्थिक और राजनीतिक आधारित साप्ताहिक पत्रिका, 55(2), 37–46.
3. **नागराजा, एन०डी० एवं कमला, एम० एस० (2022) :** विद्यालय के विद्यार्थियों में समायोजन की समस्या का अध्ययन, शिक्षा में विधि और शोध आधारित पत्रिका, 12(5), 26–30
4. **निवेदिता, सी०एस०, श्रीकंठ, जे० एवं कुलकर्णी, एस० (2024) :** शहरी निर्धन किशोरों में आत्म–सम्मान का अन्तर–सांस्कृतिक अध्ययन, सेज पकाशन द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका, 22(4), 277–281.
5. **पास्करन, ई०, हॉलमेन, ए०सी० एवं मिलर, एफ०एम० (2023) :** अल्पसंख्यकों के विभेदीकरण एवं पूर्वाग्रह आधारित व्यवहार पर आक्रामकता एवं असंतोष का प्रभाव, व्यक्तित्व एवं समाज मनोविज्ञान आधारित पत्रिका, 14 : 1177263.
6. **प्रकाश, के० ओ० (2023) :** महाविद्यालय के छात्रों में समायोजन का तुलनात्मक
7. अध्ययन, भारतीय मनोविज्ञान आधारित अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, 11(1), 2262–2268.
8. **फेज, के० एवं क्रोह, एम० (2021) :** अदृश्य पूर्वाग्रह : पूर्वाग्रही कथन पर निर्धारात्मक प्रभाव, सामाजिक और राजनीतिक मनोविज्ञान आधारित पत्रिका, 9(1), 187–206.
9. **बालाकृणनन, पी० एवं अब्राहम, डी० (2021) :** विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का मूल्यांकन, नर्सिंग शिक्षा आधारित एशियन पत्रिका, 11(1), 89–91
10. **मंडल, सी०, मुजफ्फर, एस०के० एवं परिजा, एम० (2023) :** विद्यालय के विद्यार्थियों में समायोजन की समस्या का अध्ययन, शिक्षा में विधि और शोध आधारित पत्रिका, 11(4), 873–879.
11. **लालरिनफेली, एच० एवं फनाई, एल० (2021) :** समायोजन के प्रतिमान पर माता–पिता के व्यवसाय संबंधी प्रकृति का प्रभाव, अभियंत्रण तकनीक एवं नवाचार शोध आधारित पत्रिका, 8(7)
12. **हंग, एच० (2023) :** मानवीय पूर्वाग्रह, प्रतिरोधात्मक क्यों होता है : एक भविष्यात्मक अध्ययन, ज्ञान, संस्कृति एवं नीति आधारित पत्रिका, 37(6), 779–797.
13. **त्रिपाठी, भी० एवं कुमार, आर० (2025) :** भारत में बच्चों की पूर्वधारणा पर धार्मिक जागरूकता का प्रभाव, भारतीय मनोविज्ञान आधारित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 13(2), 825–840.

•